साहित्य में तुलनात्मक अध्ययन

(COMPARATIVE STUDY IN LITERATURE)

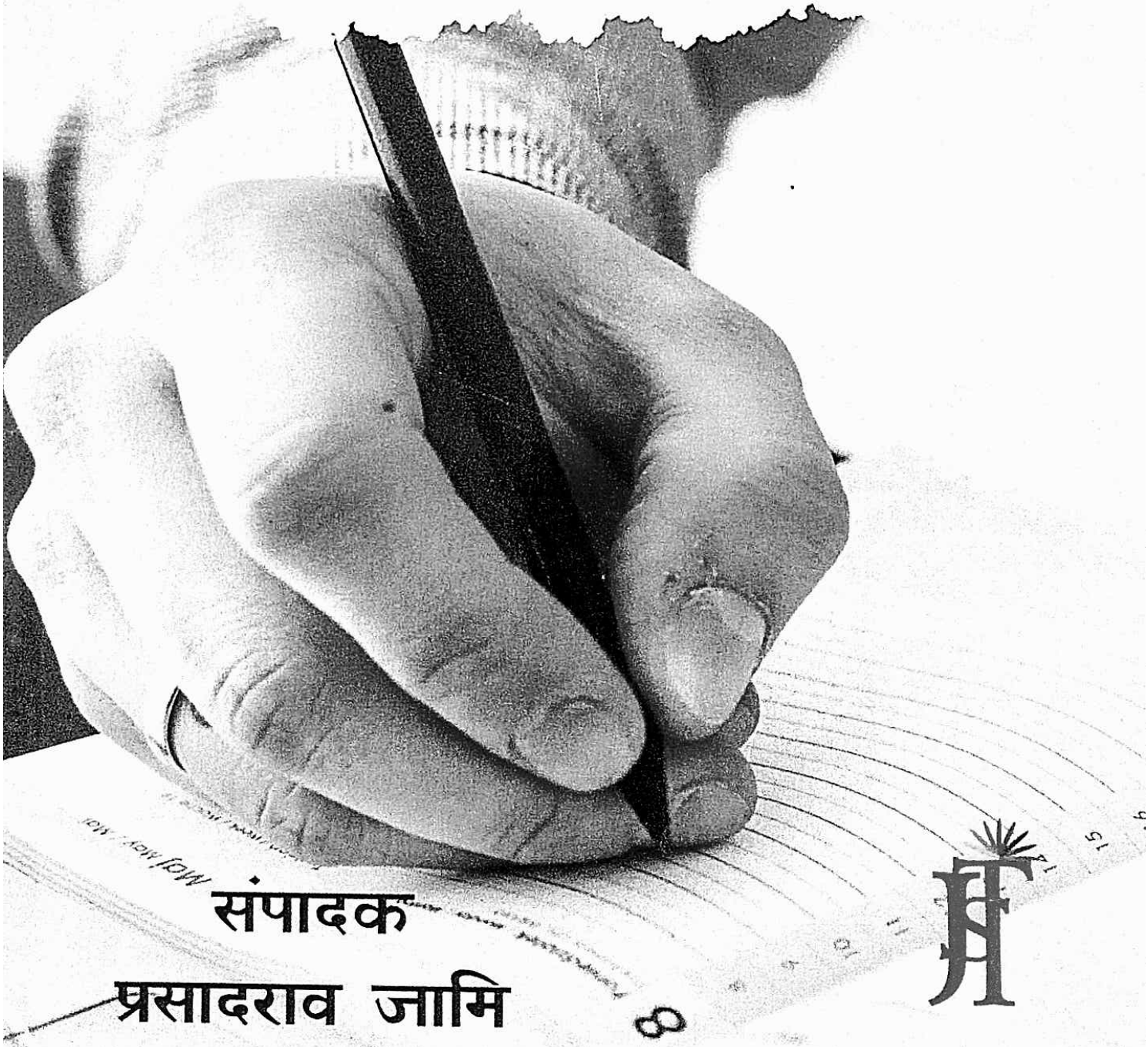

संपादक

प्रसादराव जामि

साहित्य में तुलनात्मक अध्ययन

(COMPARATIVE STUDY IN LITERATURE)

संपादक

प्रसादराव जामि

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स
वी-508, गली नं.17, विजय पार्क,
दिल्ली-110053
मो. 08527460252, 09990236819
ईमेलः jtspublications@gmail.com

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स, दिल्ली

साहित्य में तुलनात्मक अध्ययन

संपादक

प्रसादराव जामि

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन- फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक/ संपादक/ प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित शोध-पत्रों में निहित विचार तथा संदर्भों का संपूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है। संपादक/ प्रकाशक इसके लिए उत्तरदायी नहीं है।

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : २०२४

ISBN 978-81-971200-6-0

जे.टी.एस. पब्लिकेशन

बी–508 गली नं.17,विजय पार्क,दिल्ली –110053

मो. 08527460252,9990236819

ई मेल : jtspublications@gmail.com

ब्रांच ऑफिस : ए-9 नवीन इनक्लेव गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, पिन -201102

मूल्य : १२०० रूपये

आवरण : प्रतिभा शर्मा, दिल्ली

मुद्रक : जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स, दिल्ली

संपादक की कलम से... ... ...

"ॐ असतो मा सद्गमय।
तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्मामृतं गमय ॥
ॐ शांति शांति शांति ही:"

यह श्लोक ऋग्वेद का दूसरा श्लोक है। इस श्लोक का भाव इस प्रकार है-
हे! प्रभु मुझे असत्य से सत्य की ओर ले चलो, मुझे अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो, मुझे मृत्यु से अमरत की ओर ले चलो, इस आत्मा को संपूर्ण शांति प्रदान कर।
इस प्रकार अनुवाद की परंपरा भारतीय उपखंड में अत्यंत प्राचीन है। भारत के भाषा विकास में अनेक भाषाओं के उद्भव और विकास का एक सहज रूप देखा जा सकता है।इस पुस्तक में साहित्यिक अभिव्यक्ति, उसके भाषा रूप और साहित्य के प्रकारों का एक सामान्य परिचय दिया गया है। इसके साथ-साथ अनुवाद की प्रकृति पर प्रकाश डालते हुए साहित्यिक अनुवादों की सामान्य विशेषताओं का दिग्दर्शन भी यथा संभव हुआ है। भाषा और साहित्य की गतिविधियों के बीच अनुवाद की आवश्यकता यहां रेखांकित हुई है। भाषा, साहित्य एवं अनुवाद के स्वरूप तथा परस्पर संबंध का सामान्य विवरण दिया गया है। सूचनात्मक एवं रचनात्मक अनुवाद का अंतर देखा और परखा गया है।सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है। इसके प्रत्येक कदम पर अनुवादक के सामने कठिनाइयां आती हैं। ऐसी कठिनाइयों का दिशा-निर्देश करना और उसके जरिए अनुवाद कुशलता बढ़ाना इस पुस्तक का मुख्य ध्येय है। भाषाओं का आदान-प्रदान अनुवाद से होता है। इस अनुवाद में स्रोत भाषा की संस्कृति का प्रतिबिंबन लक्ष्य भाषा में किए गए अनुवाद में होता है।इस सिलसिले में कई समस्याएं व विलक्षणताएं अनुवादक को अनुभव होती है। उनके बारे में विशेष विचार करना ही इस पुस्तक का मुख्य ध्येय है। भारत एक महान राष्ट्र है। हिमालय पर्वत श्रृंखलाओं से लेकर कन्याकुमारी की अपार जल तरंगा तक व्याप्त इस अखंड उपखंड को हजारों वर्षों से भारतीय मेधा एवं सामान्य जन समूह दोनों ने एक इकाई तथा एक राष्ट्र के रूप में स्वीकारा है।देश भाषाओं की साहित्यों के स्वाभाविक विकास की गतिविधियों का अनुशीलन करते समय एक समासिकता स्पष्टत: देखी जा सकती है। जिसके आधारशिला पर उनका विकास हुआ है। भाषा साहित्य में इस प्रकार का प्रभाव ग्रहण भारत की विशिष्टता ही है।अनुवाद और अनुवाद अध्ययन के संक्षिप्त

अनुक्रमाणिका

क्र.	लेख का नाम /लेखक	पेज
1.	साहित्य एवं अनुवाद प्रसादराव जामि	11
2.	अनुवाद महत्व और स्वरूप डॉ. गिरीश कुमार सिंह	25
3.	दक्षिण भारतीय तेलुगु साहित्य में देश-प्रेम की भावना डॉ. सैंडिनेनी अमरेंदर	31
4.	महादेवी वर्मा की संघर्ष-कथा डॉ० घनश्याम भारती	41
5.	तुलनात्मक अध्ययन: अनुवाद सावित्री जामि	48
6.	राजनीतिक साहित्य स्थानीय शहरी निकायों में अनु०जातियों का पटना नगर निगम (बिहार) में तुलनात्मक अध्ययन मुरारी शंकर	52
7.	वाल्मीकि महर्षि और गोस्वामी तुलसीदास के साहित्यिक तुलनात्मक अध्ययन प्रवीण कुमार जामि	57
8.	भारतीय उपखंड में अनुवाद लक्ष्मी प्रसन्ना जामि	64
9.	सिनेमा में हिंदी अनुवाद: प्रभाव और चुनौतियां डॉ. आरती भट्ट , दीपिका रावत	68
10.	तुलनात्मक साहित्य की भूमिका प्रो. डॉ. शेख शहेनाज अहेमद	83
11.	तुलनात्मक अध्ययन की आवश्यकता एवं स्वरुप धनंजय कुमार गण	89

12.	"रामचरितमानस" और "राम की शकतिपूजा" में तुलना चौहान शुभांगी मगनसिंह	102
13.	मुक्तिबोध और नागार्जुन की कविताओं में दलित चेतना का संवेदनात्मक अध्ययन डॉ. सिन्धु सुमन	109
14.	तुलनात्मक साहित्य में अनुवाद का योगदान वी एन वी पद्मावती	117
15.	अनुवाद : आशय, स्वरूप एवं महत्व डॉ. अमित कुमार सिंह	125
16.	विज्ञापन में हिंदी अनुवाद : विविध आयाम डॉ. संदीप कुमार	134
17.	हिन्दी साहित्य में तुलनात्मक अध्ययन डॉ ए रमणी	139
18.	तुलनात्मक साहित्य (Comparative literature) की भूमिका डॉ. शेखर घुंगरवार	147
19.	तुलनात्मक अध्ययन की प्रासंगिकता डॉ. दीपक विनायकराव पवार	151
20.	साहित्यक हिन्दी, क्षेत्रीय भाषाओ का तुलनात्मक अध्ययन डी पी कोरी, भारती कोरी, लवली कोरी	154
21.	अनुवाद : महत्व और स्वरूप प्रो. डॉ.मुमताज इमाम पठान	164
22.	शब्दालंकारविषये विश्वनाथमम्मटयो: तुलनात्मकमध्ययनम् Rahul Dan	170
23.	భారతీయ-సంస్కృతి-సంప్రదాయ-	186

10

तुलनात्मक साहित्य की भूमिका

प्रो. डॉ. शेख शहेनाज अहेमद
हिंदी विभाग प्रमुख
हु.जयवंतराव पाटील महाविद्यालय हि.नगर

तुलनात्मक, साहित्य अंग्रेजी के 'कम्पैरेटिव लिटरेचर' का हिंदी अनुवाद है। एक स्वतंत्र विद्याशाखा के रूप बिदेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में इसके अध्ययन–अध्यापन के कार्य आजकल विशेष महत्व दिया जा रहा है। सन १८४८ में सबसे पहले इस प्रयोग अंग्रेजी कवि मैथू आर्नल्ड ने किया था। प्रारंभ में इसे लेकर बहुत विवाद रहा क्योंकि साहित्य कहानीकार, कवि आदि की सृजनशील कलात्मक अभिव्यक्ति है तो वह किसी तरह भी तुलनात्मक नहीं हो सकता। साहित्य की प्रत्येक कृति अपने आपमें पूर्ण होती है और साहित्य सृष्टि मे कहीं दूसरे साथ तुलना की जरूरत नहीं होती। 'तुलनात्मक शब्द'। साहित्य सृष्टि के संदर्भ में प्रयोग में नहीं लाया जा सकता। वस्तुत: संदर्भ रेने वेलेक ने इस इसका उत्तर देने का प्रयास किया है। तुलनात्मक शब्द में करने की प्रक्रिया जुड़ी हुई है और तुलना वस्तओं को कुछ इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है जिससे उनमें साम्य या वैषम्य का पता लग सके।

तुलनात्मक साहित्य को परिभाषित करते हुए प्रो.चौधरी ने कहा है कि "तुलनात्मक साहित्य एक से अधिक भाषाओं में रचित साहित्य का अध्ययन है और तुलना इस अध्ययन का मुख्य अंग है।[1] उनके अनुसार तुलनात्मकता एक विशेष प्रकार की मानसिकता अथवा मानसिक दृष्टि इपर है जो एकही भाषा में लिखित साहित्य के अध्ययन, दो या उससे अधिक भाषाओं में रचित साहित्य के अध्ययन तथा दो अलग–अलग राष्ट्रों की भाषाओं में लिखित साहित्य के अध्ययन के समय अलग–अलग दृष्टिकोण से कार्य करती है। भारत जैसे बहुभाषी देश की स्थिति को ध्यान में रखते हुए उन्होंने तुलनात्मक साहित्य की परिभाषा इस प्रकार दी है– "तुलनात्मक साहित्य विभिन्न साहित्यों है का तुलनात्मक अध्ययन है तथा साहित्य के साथ– प्रतीति एवं जान के दूसरे क्षेत्रों

का भी तुलनात्मक अध्ययन है।"[३] इसी परिभाषा को आधार मानते हुए डॉ. शिवकुमार मिश्र ने में अपने विचार व्यक्त किये है कि एक विशिष्ट अनुशासन तुलनात्मक में तुलनात्मक साहित्य या तुलनात्मक अध्ययन की पध्दती सामने आई। उन्होंने इन दोनों शब्दो को पर्याय मानते हुए कहा है कि चाहे पश्चिम हो चाहे हमारे यहाँ, विवाद और मतभेदों के बीच प्राय: सर्वमान्य हो चुका है कि "तुलनात्मक साहित्य से अभिप्राय तुलनात्मक अध्ययन से ही है।"[४] तुलनात्मक साहित्य तुलनात्मक अध्ययन का ही दूसरा नाम है। विद्वानों के बीच अनेक मतभेद होने के बावजूद भी यह माना जा सकता है कि वस्तुत: तुलनात्मक साहित्य से तात्पर्य तुलनात्मक अध्ययन से ही है। "तुलनात्मक साहित्य एक राष्ट्र के साहित्य की परिधि के परे दूसरे राष्ट्रों के साहित्य के साथ तुलनात्मक अध्ययन है। यह अध्ययन कला, विज्ञान, समाज, इतिहास, धर्मशास्त्र आदि ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों के आपसी संबंधों का भी अध्ययन है।"[५]

तुलनात्मक साहित्य वह विद्याशाखा है जिसमें दो या आधिक भिन्न भाषायी, राष्ट्रीय या सांस्कृतिक समूहों के साहित्य का अध्ययन किया जाता है। तुलना इस अध्ययन का मुख्य अंग है। साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन व्यापक दृष्टि प्रदान करता है। संकीर्णता के विरोध में व्यापकता आज के विश्व–मनुष्य की आवश्यकता है।

तुलनात्मक साहित्य अध्ययन एक अकादमिक क्षेत्र है जो भाषाई, राष्ट्रीय भौगोलिक और अनुशासनात्मक सिमाओं के पार साहित्य और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के अध्ययन से संबंधित है। तुलनात्मक साहित्य "अंतरराष्ट्रिय संबंधों के अध्ययन के समान भूमिका निभाता है। लेकिन भाषाओं और कलात्मक परंपराओं के साथ काम करता है, ताकि संस्कृतियों को 'अंदर से' समझा जा सके।"[६] जबकि अधिकांशत: विभिन्न भाषाओं के कार्यों के साथ अभ्यास किया जाता है, तुलनात्मक साहित्य एक ही भाषा के कार्यों पर भी किया जा सकता है यदि कार्य विभिन्न देशों या संस्कृतियों से उत्पन्न होते हैं जहाँ वह भाषा बोली जाती है।

तुलनात्मक साहित्य का विशेष रूप से अंतरसांस्कृतिक और अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र व्यापक रूप से परिभाषित साहित्य और इतिहास, राजनीति, दर्शन, कला और विज्ञान सहित मानव गतिविधि के अन्य क्षेत्रों के बीच संबंध से संबंधित है। साहित्यिक अध्ययन के अन्यरूपों के विपरित "तुलनात्मक

साहित्य अर्थव्यवस्था, राजनीतिक गतिशीलता, सांस्कृतिक आंदोलनों, ऐतिहासिक बदलाव, धार्मिक मतभेद, शहरी वातावरण, अंतर्राष्ट्रीय संबंध, सार्वजनिक नीति और उसके भीतर सामाजिक और सांस्कृतिक उत्पादन के अंत:विषय विश्लेषण पर अपना जोर देता है।

तुलनात्मक साहित्य अलग से कोई रचनात्मक आंदोलन नहीं है। यह साहित्य का विशिष्ट प्रकार नही है। यह सिर्फ साहित्य के अध्ययन के एक प्रविधि है। इस प्रविधि का उपयोग साहित्य के अध्ययन के लिए किया जाता है। उसमें एक से अधिक भाषाओं के साहित्य के तुलना करके कुछ निष्कर्ष निकाले जाते है। अत: यह साहित्य के शोध सीमा में आता है। मुसन बैसनेट ने तुलनात्मक साहित्य के स्वरूप को स्पष्ट किया। उनके अनुसार "तुलनात्मक साहित्य संस्कृति की सीमा से परे पाठ का अध्ययन करता है। जो अपनी प्रकृति में अन्तर्विधावर्ती है और जो साहित्य में उन पैटर्नों को ढूँढता है, जो देश और काल की सीमाओं से परे होता है।"[७] इससे यह स्पष्ट होता है कि इस कथन में तुलनात्मक साहित्य के मूल तत्व समाहित है। जिनमें से पहली बात तो यह है कि यह अध्ययन अन्तर्विद्यावर्ती होता है। सिर्फ एक कृति या एक रचना का इसमें स्वतंत्र रूप से अध्ययन नही होता। दूसरा यह कि अध्ययन सीमाहीन होता है, इसमें भारत के समकालीन लेखक की तुलना प्राचीन ग्रीक साहित्य के किसी लेखक से किया जा सकता है। दोनो के बीच समानताएँ और असमानताएँ ढुँढी जा सकती है।

जब भी हम किसी रचनाकार की कृति का अध्ययन करते है, तब सबसे पहले हमें यह जान लेना चाहते हैं इस कृति की रचना कब हुई प्रेमाश्रम की रचना असहयोग आंदोलन से पहले या बाद में हुई। भले ही प्रेमाश्रम सन १९२२ में प्रकाशित हुआ हो, परंतु इसका लेखन पहले का है। इसी कारण इस प्रमुख पात्र इतना निर्दयी और शक्तिशाली है। असहयोग आंदोलन के बाद ज्ञानशंकर की रचना नही हो सकती। इसी तरह कबीर जिस समाज में पले–बढ़े वह समाज जाति–प्रथा के उत्पीड़न का शिकार था। इस कारण उनमें जातीय श्रेष्ठता की धारणा का तीव्र प्रतिकार मिलता है। कबीर का यह उग्र रूप उनके समाज से आया। इसी तरह मीरा स्त्री थी, इसलिए उनमें कुछ विशेष मनोभाव मिलते हैं। उनका उत्पीड़न उनके आत्मीयों ने किया था, अत: मीरा का प्रतिकार अलग तरह का है। फिर वह राजघराने की बहु थी । उसको कुछ मर्यादाएँ थी। मीरा जब 'कुल की मर्यादा' को तोड़ने की बात कहती है, तब

उसका अर्थ बहुत गहरा है। इस तरह की सारी बातें हम साहित्य का सामान्य अध्ययन करने के लिए करते है। यह साहित्य की आलोचना है।

इसी तरह फणीश्वरनाथ रेणू का मैला आँचल एक उपन्यास है, अज्ञेय में एक लंबी कविता है, कुँवर नारायण छोटी–छोटी कविताएँ लिखते है। यह विधागत भेद बहुत महत्वपूर्ण है। फिर चित्रकला, मूर्तिकला या स्थापत्य एकदम अलग तरह की कलाएँ हैं। तुलनात्मक साहित्य इन सब विशिष्टताओं को दरकिनार कर देता है। वह तो काफका के नायक को प्रेमचंद के नायक की तुलना कर सकता है। बिधुवन के संगीत में सूरदास के भजनों का कोई रिश्ता ढूँढ सकता है। जिन संदर्भों से सामान्य साहित्य का अर्थ विश्लेषण होता है, उन सबको छोड़कर तुलनात्मक साहित्य में किसी नए अर्थ की संभावना प्रकट हो सकती है।

जिस समय युरोप में तुलनात्मक साहित्य का प्रारंभ हुआ उस समय युरोपीय देश अपने–अपने साम्राज्य का विस्तार करने के लिए दुनिया भर में युद्ध कर रहे थे, विशेष रूप से फ्रांस और इंग्लैंड के बीच भीषण संघर्ष हो रहा था। इसी के साथ पुर्तगाल, फ्रेंच, स्पेन डच भी एरिया, अफ्रिका और लैटिन अमेरिका, टकराव की स्थिति में थे। शांति का कहीं कोई प्रयास नहीं हो रहा था। ऐसे समय में विश्वविद्यालयों में शान्ति की पहल के रूप में तुलनात्मक अध्ययन विभाग आगे आए। इन लोगों ने यह स्थापित किया कि तथाकथित शत्रु देश के सर्वश्रेष्ठ रचनाकार की समानता हमारे अपने प्रिय लेखक से है। समानता के इन बिंदूओं को खोजा जाना चाहिए।

सूसन बेसनेट ने सन १९३५ के तुलनात्मक साहित्य पर चार्ल्स फिलारे के व्याख्यान को उद्धृत किया है, जिसमें उन्होंने कहा, "जारा हम विचारों को पर विचार के प्रभाव की गणना करें, लोग जिस तरह परस्पर परिवर्तित हुए हैं, हरेक ने एक दूसरे को क्या दिया और एक दूसरे से क्या प्राप्त किया। इस क्रम में सबकी वैयक्तिक राष्ट्रीयता पर इस अविरल विनिमय के प्रभाव की भी गणना करें: मसलन, लंबे समय से पृथक रही उत्तर की भावना ने अंतत: कैसे अपने आयत में दक्षिण की भावना। के प्रवेश की अनुमति दी; इंग्लैड के प्रति फ्रांस और फ्रांस के प्रति इंग्लैंड का कौनसा चुंबकीय आकर्षण था, अपने अंगी राज्यों पर समय वर्चस्व के लिए कैसे यूरोप के हर भूभाग ने प्रायश्चित किया और उन्हें पुन: अवसर दिया; धर्मप्राण

जर्मनी, कलाप्रेमी इटली, ऊर्जावान फ्रांस, कैथोलिक स्पेन, प्रोटेस्टेंट इंग्लैंड के प्रभाव का क्या हुआ; शेक्सपियर के गहन विश्लेषण के साथ दक्षिण की मनभावन आभा का तालमेल कैसे बना। गेयटे और इतालवी भावनाओं ने मिल्टन की कैथोलिक आस्था को अलंकृत कर कैसे सजाया। और अंतत: आकर्षण, सहानुभूति जैसे जीवंत, महान, गुप्त, कुछ महज्ञान एवं कुछ अध्यवसाय के कारण प्रतिबिंबित विचार के स्थाई स्पन्दन सारे के सारे अपने–अपने प्रभाव प्रस्तुत कर रहे; जिन्हे वे उपहार की तरह स्वीकारते है और भविष्य में सारे के सारे नए अप्रत्याशित प्रभाव उत्सर्जन में तब्दील हो जाते है।"[८]

इस तरह तुलनात्मक साहित्य के प्रारंभिक विद्वानोंका मत है कि किसी लेखक या विचारक के विचार एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। समाज में प्रत्येक व्यक्ति किसी एक से कुछ पाता है और किसी दूसरे को कुछ देता है। यह लेन–देन भौतिक स्तरों की तरह चिंतन के स्तर पर भी चलता है। राष्ट्रों के बीच वैचारिक विनिमय होता है। आजकल भारत की या संसार की आत्मा अमेरिका से प्रभावित है। कभी चीन, जापान और कोरिया, भारत से प्रभावित हुए थे। यह सांस्कृतिक आदान–प्रदान है। इस प्रक्रिया एक संस्कृति दूसरी संस्कृति को कुछ उपहार में देती है। तुलनात्मक साहित्य के अध्येताओं ने ढूँढ निकाला कि शेक्सपियर का फ्रेंच साहित्य पर प्रभाव पड़ा था तथा फ्रेंच साहित्य का असर शेक्सपियर की रचनाओं में उपलब्ध है। इसी बीच युरोप में राष्ट्रवाद अपने चरम में था। इस कारण सब लोग अपने–अपने राष्ट्र की प्रशंसा के तत्व ढुंढते रहता रहते। इन लेखकों ने राष्ट्रवाद की सीमाओं को तोड़ने के साथ–साथ राष्ट्रवाद को मजबूत भी किया। रैनवेलेक के अनुसार, "यह सांस्कृतिक बहिखाते की विचित्र व्यवस्था की ओर ले जाता है, अपने देश के जमाखाते को को बढ़ाने की कामना, जिसे यह सिध्द करके पूरा किया जाता है कि इसके देश ने दूसरे देशों पर यथासंभव प्रभाव डाले हैं या अधिक सुक्ष्मरूप से यह साबित करना चाहता है कि इसके देश ने विदेशी साहित्यकार को किसी अन्य देश से अधिक आत्मसात किया और समझा है।"[९]

तुलनात्मक साहित्य का अध्ययन करनेवाले विद्वानों के कार्यों का परीक्षण करने के उपरांत विचारक इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि तुलना प्रस्थान बिंदु अध्येता की अपनी भाषा और उसका साहित्य होता है। व्यवहार में तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन में एक भाषा प्रधान होती है और दूसरी गौण

होती है। उदाहरण के लिए अंग्रेजी साहित्यकार शेक्सपियर सर्वकालिक, सर्वश्रेष्ठ, सर्वमान्य रचनाकार है। इस बात को लेकर युरोप में कोई मतभेद नहीं है, भारत में इसे कई लोग, मानते हैं। इस तरह शेक्सपीयर साहित्य की श्रेष्ठता के मानक है। उसी तरह भारत के लिए यह महत्ता कालिदास को प्राप्त है। अब शेक्सपीअर और कालिदास की तुलना करते हैं तो इस निष्कर्ष पर पहुंचते है कि कालिदास पूर्व शेक्सपियर है। तुलनात्मक अध्येताओं पर यह आरोप लगाया जाता इसमें गहन रचनाओं की तुलना सामान्य लेखकों से की जाती है, गहन रचना ओंकी तुलना सामान्य रचनाओं से की जाती है, सशक्त संस्कृति की तुलना अपेक्षाकृत अल्पविकसित संस्कृति से की जाती है। इस प्रक्रिया में श्रेष्ठ को पुन: श्रेष्ठ सिध्द किया जाता है।

साहित्य अध्ययन के क्षेत्र में तुलनात्मक साहित्य नोवोभ्दूत की अध्ययन पध्दति है, जिसमें एकाधिक भाषाओं के साहित्य के साम्य–वैषम्य का अध्ययन किया जाता है। कई बार यह एक ही भाषा के दो रचनाकारों के साहित्य को लेकर भी होता है। अध्येता तुलनात्मक के किसी व्यवस्थित आधार की कसौटी पर इस अध्ययन को आगे बढ़ाते है। आधुनिक शिक्षा विधान के क्षेत्र में तुलनात्मक साहित्य मानवीय, राष्ट्रीय, अन्तरराष्ट्रीय संबंधो को गहनतर बनाने का बेहतरीन साधन है।

संदर्भ :–

१) चौधुरी, प्रो. इंद्रनाथ, मा–तुलनात्मक साहित्य–भारतीय परिप्रेक्ष्य,वाणी प्रकाशन–नई दिल्ली,२०१०. पृ. १५

२) वही–वही पृ–१७

३) परमार, डॉ.ए.एन आर (सं) विश्वग्राम और तुलनात्मक साहित्य, नलिनी अरविंद एंड टी.वी.पटेल कॉलेज वल्लभ विद्यानगर गुजरात २००९ पृ. १३५

४) हेनरी एच.एच. रेमाक

५) तुलनात्मक साहित्य : भारतीय परिप्रेक्ष्य । इन्दनाथ चौधरी–पृ.२१

६) तुलनात्मक अध्ययन – सूसन बैसनेट– पृ.१

७) वही–वही पृ.१२–१३

८) आलोचना की धारणाएँ – रेनवोलके–पृ.१६१.

९) तुलनात्मक साहित्य की भूमिका–इंद्रनाथ चौधरी, नेशनल पाब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली।